पर्यावरण की दूषितता : एक भौगोलिक समस्या

अधिकतर लोगों को अपने घर की चहारदीवारी के बाहर की दुनिया पर आश्रित होना पड़ता है। उदाहरण के तौर पर—आजीविका के उपार्जन, भोजन और वस्त्र की उपलब्धि, मनोरंजन और भावनाओं की सन्तुष्टि तथा सामुदायिक निर्णयों में यथायोग्य हिस्सा लेना और ऐसे प्रयास करना जिनका सम्बन्ध किसी व्यक्ति का अपने ही हित से होता है।

जब भी लोग समाज में इनमें से किसी प्रकार का कार्य करते हैं तो उनके सामने कुछ जोखिमें आती हैं। ये खतरे '**पर्यावरण**' (Environment) से सम्बन्धित हो सकते हैं, जैसा कि खेत, खान और खलिहान में तथा कल-कारखानों, नदी और समुद्र में यातायात के साधनों और तरीकों में उस जल में जो कि दूषित हो जाता है, कुछ रसायनों और रोग के जीवाणुओं से, वायु का दूषण जो कि कल-कारखानों तथा खेतों से निकलने वाली गन्दगी से उत्पन्न होता है और जीवन के भीड़-भाड़, शोर-शराबे तथा गर्द-गुब्बार से उत्पन्न मानसिक तनाव। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे भी खतरे स्वास्थ्य के लिए होते हैं जिन्हें हमारे घर में ही जन्म मिलता है—घर में काम में लाया गया जल तथा मल-मूत्र आदि जो कि पड़ोसियों के लिए ही नहीं, बल्कि अपने परिवार के लिए भी कष्ट का कारण हो सकते हैं।

दूसरी ओर स्वास्थ्य के लिए जोखिम की बातें हैं, उनसे सुरक्षा के लिए किये गये सामाजिक क्रिया-कलापों के प्रभाव से परिवार को लाभ होता है। ये कार्य ऐसे हैं जो कि समुदाय द्वारा अथवा उसके सहयोग से ही किये जा सकते हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य सेवाएँ उस समय सुचारु रूप से कार्य करती हैं, जब लोग उनके लिए आर्थिक एवं स्वास्थ्य के व्यावहारिक पहलू के साथ सहयोग देते हैं। दूषित जल एवं भोजन से फैलने वाले रोगों से सुरक्षा प्रदान करने के लिए बहुत-सी सेवाएँ संगठित की जाती हैं और चलाई जाती हैं। खानों तथा कारखानों आदि में काम पर जाने वालों को सुरक्षा देते हैं तथा मोटर चालकों और सड़क पर पैदल चलने वाले और ऐसे किसी भी व्यक्ति को जो दूषित वायु में साँस लेने का जोखिम उठाता है, ये सेवाएँ रक्षा करती हैं।

सामाजिक तथा आर्थिक विकास के साथ-साथ विश्व के सभी भागों में इसमें बहुत ही तेज रफ्तार से वृद्धि हो रही है। विकासशील देशों में औद्योगीकरण और नगरीयकरण (Urbanisation) अत्यधिक द्रुत गति से बढ़ रहा है, समाज जटिल बनता जा रहा है और नई-नई संस्थाओं का निरन्तर अभ्युदय हो रहा है—इनमें से जो कि जन-संचार के विभिन्न तरीकों के लिए कृतसंकल्प हैं, वे भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। अपेक्षाकृत विकसित देशों में औद्योगिक विकास के कारण पर्यावरण से सम्बन्धित बहुत-सी समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं,

Scanned with CamScanner

जिनको सुलझाना होगा। इस अनुभव का लाभ विकासशील देशों पर प्रभावकारी ढंग से ऐसा पड़ा है कि वे बढ़ते हुए आर्थिक विकास की स्थिति से उत्पन्न समस्याओं की खाई में न गिरे, इसलिए पहले से ही सचेत है।

ऐसी आबादियों में जहाँ घनत्व अधिक नहीं है तथा प्राविधिक स्तर नीचा है और जहाँ परम्परागत तरीकों से बड़े-बड़े धरती के चप्पों पर खेती होती है और छुट-पुट मकान हैं। ऐसी जगहों पर सामाजिक प्रक्रिया और स्वास्थ्य पर दूषित प्रभाव बहुत कम है, क्योंकि ज्यादातर लोग स्पष्ट रूप से आत्म-निर्भर हैं। एक घर दूसरे घर से काफी फासले पर होता है, जिससे घर से निकले नालों का पानी सुखा देने के लिए धरती सक्षम हो जाती है और भोजन के लिए उपलब्ध खाद्य-सामग्री और कपड़े-लत्ते के लिए निश्चिन्तता के कारण परस्पर आश्रित होने का स्तर भी नीचा होता है।

कृषि के उपयोग में लाये जाने वाले रसायनों को सुरक्षित ढंग से प्रयोग न करने से धरती और जल दूषित हो जाता है। कल-कारखाने अपने आस-पास दूषित पदार्थों का निष्कासन इस प्रकार करते हैं कि इससे वायु और उस क्षेत्र के जल-वायु दूषित हो जाते हैं। नगरों में रहने वाले परिवार जो काफी धनाढ्य हैं, वे भी उद्योगों और यातायात से उत्पन्न होने वाले वायु दूषण से नहीं बच सकते और ऐसे ही दूषित वातावरण में विभिन्न प्रकार के रोग फैलते हैं।

औद्योगीकरण, नगरीकरण, भीड़, दूषण और तनाव तथा अन्य कारणों से उत्पन्न परेशानियों और खतरों से बचाव के लिए प्राकृतिक तथा सामाजिक विज्ञानों का ज्ञान अत्यन्त ही आवश्यक है। सामाजिक विज्ञानों (जैसे—भूगोल, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र) के ज्ञान के साथ सार्वजनिक स्वास्थ्य-शिक्षा का ज्ञान होना भी अत्यन्त आवश्यक है। भूगोल अध्यापक अपने प्रभावोत्पादक शिक्षण द्वारा छात्रों के मस्तिष्क पर वातावरण की विषाक्तता, उसके कारण, उनके हानिकारक प्रभाव तथा छात्रों का इस दिशा में कर्त्तव्य आदि की आवश्यकता पर जोर दे सकता है और इस बढ़ते हुए खतरे से छात्रों को सावधान किया जा सकता है। भूगोल का इस दिशा में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान है कि भावी नागरिकों को पर्यावरण की दूषितता से हानियों के विषय में बतलाकर उसे शुद्ध रखने की शिक्षा दे सकता है।

भौगोलिक पर्यावरण की दूषितता वास्तव में बहुत गम्भीर समस्या बन गई है। संसार की राइन (जर्मनी में), सोन नदी (फ्रांस में), यमुना (भारत में), टेम्स (इंग्लैण्ड में) आदि नदियों का जल औद्योगिक नगरों के बड़े कारखानों से निकलने वाली गन्दगी से प्रतिदिन दूषित होता रहता है। साथ ही, कारखाने से निकलने वाली कोयले की गैस आदि से वायुमण्डल भी दूषित रहता है और जन-स्वास्थ्य के लिए बहुत बड़ा खतरा उपस्थित हो गया है।

उत्तर प्रदेश का फिरोजाबाद नगर काँच के उद्योग का केन्द्र है। इस उद्योग के अत्यधिक केन्द्रीकरण के कारण इस नगर की आबादी लगभग 30 हजार से बढ़कर 1 लाख हो गई है, असंख्यों काँच के कारखानों की भट्टियाँ दिन-रात चलती रहती हैं और वहाँ का वायुमण्डल दूषित होता रहता है, काँच के कारखानों से निकलने वाले दूषित पदार्थ पर्यावरण को और भी अशुद्ध करते रहते हैं। यहाँ की नगरपालिका बहुत ही निकम्मी है और अपने नगर की सफाई तथा जन-स्वास्थ्य की अवहेलना करती है। इसके दुष्परिणामस्वरूप नागरिकों का जीवन खतरे में पड़ गया है। कई सम्मानित प्रबुद्ध नागरिक इस नगरी को छोड़ चुके हैं और नगर में गन्दगी के कारण चेचक और टाइफायड रोग फैलने लगा है।

Scanned with CamScanner

भूगोल तथा अन्य सामाजिक विषयों के अध्यापकों का कर्त्तव्य है कि आज के छात्र जो भविष्य के नागरिक हैं, उन्हें पर्यावरण सम्बन्धी इस प्रकार की शिक्षा दें—

(अ) पर्यावरण क्या है ? उसकी शुद्धि का महत्त्व।

(ब) औद्योगीकरण तथा नगरीयकरण का पर्यावरण पर प्रभाव।

(स) पर्यावरण को अधिक-से-अधिक शुद्ध किस प्रकार रखा जा सकता है ?

(द) हर एक नागरिक का पर्यावरण शुद्ध रखने में योगदान।

(य) हर एक छात्र जन-स्वास्थ्य शिक्षा के सिद्धान्तों से परिचित कराकर पर्यावरण की शुद्धता का महत्त्व बतलाना।

प्रजातान्त्रिक प्रणाली में हर एक नागरिक को इस प्रकार की शिक्षा देकर ही हम पर्यावरण शुद्ध रख सकते हैं। आज का छात्र कल का नागरिक है, इसलिए इस प्रकार की शिक्षा छात्रों को विद्यालयों में ही दी जा सकती है।

निकट भविष्य में मथुरा में बनाये जाने वाले पेट्रोलियम शुद्ध करने के विशाल कारखाने से वायुमण्डल में निकले रासायनिक पदार्थ 'ताजमहल' के सौन्दर्य को बिगाड़ सकते हैं—इस तरह की चर्चा समाचार-पत्रों में होने लगी है और निकटवर्ती स्थानों के निवासियों के स्वास्थ्य पर वायुमण्डल में निकले हुए दूषित पदार्थों द्वारा हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है, अत: वैज्ञानिक इस दिशा में उपाय कर रहे हैं कि किस प्रकार पर्यावरण शुद्ध रखा जा सकता है और ताज का सौन्दर्य नष्ट होने से बचाया जा सकता है। अधिक आबादी, खेती में उपयोग किये जाने वाले उर्वरक, अत्यधिक औद्योगीकरण तथा अन्य रासायनिक पदार्थ कारखानों से निकलने वाली दूषित गैसें, कोयला, कचरा और Waste products, कूड़ा-करकट आदि। यदि कोई औद्योगिक नगर नदी तट पर स्थित है तो ऐसे पदार्थ को पानी में फेंक देने से जल और दूषित हो जाता है और पीने पर हानि करता है। आवागमन के साधनों में उपयोग होने वाली पैट्रोल से निकलने वाली दूषित वायु बहुधा मोटर-ठेले तथा अन्य स्वचालित वाहन सड़क पर काले रंग का धुआँ छोड़ते जाते हैं जिसमें पैदल चलने वाले व्यक्तियों को साँस लेनी पड़ती है और उनके स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है।

बहुत से ऐसे क्षेत्र जहाँ कुछ वर्ष पूर्व कुछ भी आबादी नहीं थी, लेकिन शीघ्र ही तेजी से आबादी बढ़ी, रहने का स्थान कम, आबादी अधिक, परिणाम यह हुआ कि बढ़ती हुई आबादी शौच आदि के लिए निकटतम खुले स्थानों पर जाने लगी और उनके मल-मूत्र से जमीन और वायुमण्डल दूषित होने लगता है। अगर निकट में कोई '**जलाशय**' हुआ तो उसके जल के अशुद्ध होने की सम्भावना रहती है। आवश्यक है कि सार्वजनिक स्वास्थ्य विभाग ऐसी बढ़ती हुई आबादी के लिए शौचालय एवं मूत्रालय की सुविधा प्रदान करे जिससे पर्यावरण शुद्ध बना रहे।

समुद्र को दूषण से बचाने के कदम—समुद्र में जहाजों के कारण जो दूषण फैलता है, उसे नियन्त्रित करने के लिए विश्व के देशों के बीच अन्तर्राष्ट्रीय करार किया जायेगा। जहाजों द्वारा समुद्र को दूषण से बचाने के उपायों को प्रभावशाली बनाने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय करार का मसविदा लन्दन में 71 देशों के प्रतिनिधियों की बैठक में स्वीकार किया गया है। यह बैठक लगभग एक माह चली।

पर्यावरण की दूषितता शोर-शराबे के कारण भी हो जाती है, अधिक शोरगुल भी मनुष्य के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य पर बहुत हानिकारक प्रभाव डालता है। मनुष्य एकाग्रचित्त

Scanned with CamScanner

होकर शान्तिपूर्वक कार्य नहीं कर पाता है, उसकी कार्य करने की क्षमता तथा कुशलता पर शोरगुल का घातक प्रभाव होता है और जितना अच्छा कार्य शान्त वातावरण में वह कर पाता है, उतना शोरगुल के मध्य में नहीं कर सकता है। मनुष्य का ध्यान शोर के कारण लगातार बँटता रहता है और कार्य के सुचारु रूप से करने में बाधा पहुँचती रहती है। इस प्रकार पर्यावरण शोर-शराबे से भी दूषित होता रहता है और मानसिक तनाव उत्पन्न हो जाता है जिससे कार्यक्षमता पर भी बहुत दूषित प्रभाव पड़ता है और कार्यक्षमता का ह्रास होने लगता है।

आज के छात्र भावी नागरिक हैं। उन्हें इस प्रकार शिक्षित किया जाय कि वातावरण की दूषितता किस प्रकार रोकी जा सकती है और पर्यावरण को शुद्ध किस प्रकार रखा जाय। यह भूगोल के उचित शिक्षण द्वारा ही सम्भव है। इसलिए स्कूली पाठ्यक्रम में भूगोल का अत्यन्त महत्त्व है।

●●

Scanned with CamScanner